अप्रेल १९९९ हिंदी पत्रिका में प्रकाशित

वर्ष १९९८ में धर्म-प्रसार

● **पूज्य गुरुजी और माताजी की धर्म-यात्राएं –**

पूज्य गुरुजी ने इस वर्ष उत्तर भारत, गुजरात तथा बोधगया के विपश्यना केंद्रों के अतिरिक्त पूर्व व दक्षिणपूर्व एशिया की बड़ी महत्त्वपूर्ण धर्मचारिकाएं पूरी कीं।

भारत – उत्तर भारत में क्रमशः – धम्मधज, धम्मसिखर, धम्मसोत और धम्मसलिल के केंद्रोंपर चल रहे शिविर के साधकोंको पूज्य गुरुजी के सान्निध्य का लाभ तो मिला ही, स्थानीय सरकारी अधिकारियों, संचार माध्यमों और अनेक गण्यमान्य लामाओं भिक्षुओं से भी धर्मचर्चाएं हुइर्। सभी स्थानों पर उनके अनेकानेक धर्म-प्रवचनों का आयोजन हुआ, जिनमें हजारों लोगों को धर्मलाभ हुआ। प्रवचन सुन कर अनेक लोग शिविरों में सम्मिलित हुए। इसी दौर में उनका एक प्रवचन 'कम्मासपुर' गांव में हुआ। इतिहासकारों का मानना है कि यहीं पर भगवान बुद्ध ने महासतिपट्ठानसुत्त का धर्मोपदेश दिया था।

गुजरात यात्रा के दौरान 'धम्मपीठ' तथा 'धम्मकोट' पर शिविर-साधकों को धर्मलाभ देते हुए क्रमशः अहमदाबाद तथा राजकोटमें सार्वजनिक प्रवचन दिये। प्रत्येक में ३ से ५ हजार लोगों को धर्मलाभ मिला। यहां पत्र-पत्रिकाओंके अतिरिक्त आकाशवाणी एवं टेलीविजन केंद्रों का भी धर्मप्रसार में अच्छा सहयोग रहा।

भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय की ओर से सारनाथ में आयोजित 'बुद्ध महोत्सव' के चर्चासत्र में पूज्य गुरुजी को मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया, जिसके फलस्वरूपअनेक देशों से पधारे हुए वक्ताओं कोआध्यात्मिक चिंतन की नई दिशा मिली।

दक्षिण-पूर्व एशिया – पूज्य गुरुजी और माताजी ने जुलाई से सितंबर तक सात देशों की धर्मचारिका पूरी की। एक सप्ताह की **म्यंमा** (बर्मा) यात्रा में उन्होंने सार्वजनिक प्रवचन दिये, जिनमें लगभग २००० लोगों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त कुछ एक प्रमुख भिक्षुओं और सांस्कृतिक मंत्रालय जैसे महत्त्वपूर्ण विभाग के अधिकारियों से परिचर्चा की। **थाईलैंड** के 'धम्मकमल' केंद्र पर नवनिर्मित विपश्यना पगोडा का उद्घाटन किया और वहां चल रहे प्रथम ३० दिवसीय शिविर की विपश्यना दी। यहां भी अनेक महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के साथ परिचर्चा के अतिरिक्त कई प्रवचन हुए। **ताईवान** में लगभग एक महीने के प्रवास के दौरान पत्रकारसम्मेलन तथा अनेक महत्त्वपूर्ण लोगों कोसाक्षात्कार देने के अतिरिक्त भारत के बाहर लगे सबसे बड़े (३८० लोगों के) शिविर का संचालन किया, जो कि एक स्कूलमें लगा था। **हांगकांग** कीयात्रा के दौरान वहां कई महत्त्वपूर्ण प्रवचनों के अतिरिक्त भारतीय मूल के लोगों के लिए हिंदी में प्रवचन रखा गया। वहां एक विहार के प्रांगण में योग्य स्थान पर नियमितरूप से शिविर लगते रहने की भी स्वीकृति प्रदान की। आंतरिक कलह के कारण **कम्बोडिया** जाना खतरनाक था, फिर भी साधकों के उत्साहवर्धन के लिए वहां जाने का निश्चय किया। 'धम्मकम्बोज' केंद्र पर एक घंटे की सामूहिक साधना और उनके प्रवचन तथा कुछ एक अन्य प्रवचनों से वहां व्याप्त असुरक्षा की भावना से उबरने में साधकोंको बड़ी राहत मिली और उनमें काम करने का ऐसा उत्साह जागा कि एक के बाद एक, तीन नए विपश्यना केंद्र खुल गये। उन्हें विश्वास हो गया कि धर्म धारण करने से देश में शांति, सुख और श्री-वृद्धि निश्चित है।

इसके बाद वे **सिंगापुर** और **मलेशिया** भी गये। वहां के प्रवचनों में पूज्य गुरुजी ने कहा कि दक्षिण एशिया में भगवान बुद्ध की शिक्षा (परियत्ति) से लोग भली प्रकार परिचित हैं। अब प्रतिपत्ति याने विपश्यना विधि के व्यावहारिक अभ्यास से लाभान्वित होकर बहुत बड़ी संख्या में लोग इस विद्या की ओर आकर्षित हो रहे हैं। इससे स्पष्ट होता है कि सयाजी ऊ बा खिन की यह उक्ति कितनी सत्य थी कि –"विपश्यना का डंका बज चुका है। अब विश्व के सभी लोग इसका लाभ ले सकेंगे।"

● **छट्ठ संगायन के सीडी-रोम का दूसरा संस्करण –**

सीडी-रोम (सघन तश्तरी) के दूसरे संस्करण में देवनागरी, रोमन और म्यंमा (बर्मी) के अतिरिक्त चार अन्य लिपियों (सिंहली, थाई, कम्बोडियन और मंगोलियन) में संपूर्ण तिपिटक पढ़-देख सकनेकी सुविधा प्रदान की गयी है। इसमें ४० नई पालि पुस्तकोंके समावेश के साथ 'आंग्ल-पालि शब्दकोश' भी निवेशित किया गया है। यह इन देशों के प्रमुख भिक्षुओं, संस्थाओं और विश्वविद्यालयों को दानस्वरूप दिया गया। इसी प्रकार विपश्यना विशोधन विन्यास ने १९९८ में खुद्दकनिकायसेट २ और ३ के २१ भागों को (पुस्तकोंके रूप में) भी विश्व के अनेक लोगों कोवितरित किये।

पूज्य गुरुजी द्वारा पालि भाषा में रचित **"बुद्धसहस्सनामावली"** नामक काव्य-रचनाका प्रकाशनहुआ, जिसमें भगवान बुद्ध के गुणों को उजागर किया गया है। कम्प्यूटर की सहायता से उपरोक्त सीडी की तरह यह सात लिपियों में उपलब्ध है। इसकी प्रतियां श्रीलंका, थाईलैंड, कम्बोडिया, मंगोलिया और म्यंमा को इनकी अपनी लिपि में तथा शेष विश्व को रोमन तथा देवनागरी में दानस्वरूप वितरित की गयीं।

● **विपश्यना पगोडा का निर्माण**

गोराईगांव, मुंबई स्थित विशाल 'विपश्यना स्तूप' के निर्माण का प्रथम चरण पूरा हुआ, जिसमें नींव के साथ परिक्रमा गली की आधारशिला, परिक्रमा गली की बेसमेंट स्लैब आदि का काम शामिल है। पगोडा फ्लोर तक के काम के बाद अब अगले चरण अर्थात वास्तविक पगोडा के स्टील सुपरर के टेंडर्स आमंत्रित किये गये हैं। जनवरी १९९९ में यहां पूज्य गुरुजी के सान्निध्य में बड़ी संख्या में साधकों की सामूहिक साधना का आयोजन किया गया और उनका प्रेरणाजनक प्रवचन भी हुआ। इसी प्रांगण में ६ मार्च १९९९ को एक हजार से अधिक साधक साधिकाओं ने पूज्य

गुरुजी के मार्गदर्शन में **एक दिवसीय** शिविर में भाग लिया।

● **विश्वव्यापी विपश्यना विडियो-आयोजन**

जेलों में विपश्यना पर बनी फिल्म (छायाचित्र) "डूइंग टाइम, डूइंग विपस्सना" का विश्व के अनेक चैनलों पर प्रसारण किया गया और अनेक स्थानों पर विडियो दिखाया गया। इससे लोगों में विपश्यना के प्रति एक नई जागृति आयी। इस फिल्म को 'गोल्डेन ग्लोब' जैसे कई पारितोषिक प्राप्त हुए। अमेरिका की 'नेशनल काउंसिल ऑफ क्राइम एण्ड डेलिंक्वैंसी' से भी पारितोषिक प्राप्त हुआ। १९९८ में चौथी नई फिल्म "आईलैंड ऑफ धम्म" बनी, जिसमें विश्व के २१ विपश्यना केंद्रों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी है। मुख्य योजना जिस फिल्म के लिए बनी थी वह अभी संपादन के दौर में है। इसमें धर्म-प्रसार के बारे में विशेष जानकारी दी जायेगी और गुरु-शिष्य परंपरा को दर्शाते हुए आचार्यों तथा साधकों के साक्षात्कार व भविष्य के लिए प्रेरणात्मक संदेश होंगे।

● **इंटरनेट पर धर्म-प्रसार**

आज के त्वरित गति से बदलते परिवेश को ध्यान में रख कर इंटरनेट पर वि. वि. विन्यास के प्रकाशन, सीडी-रोम, पूज्य गुरुजी के कार्यक्रम, शिविर-संबंधी सूचनाएं धम्मगिरि होमपेज (www.vri.dhamma.org) पर प्राप्त कर सकते हैं।

नए साधकों के लिए 'होमपेज' (www.dhamma.org) पर विपश्यना साधना के बारे में प्रारंभिक जानकारियां, विश्व भर के भावी शिविर कार्यक्रम, अनुशासन संहिता आदि उपलब्ध हैं। इसमें पूज्य गुरुजी के हिंदी व अंग्रएजी में दो विडियो प्रवचन और 'हिल ऑफ धम्म' को भी जोड़ा गया है।

पुराने साधकों के लिए 'होमपेज' (www.dhamma.org/os) में 'इन्फरमेशन ऑफ इंटरेस्ट टु विपश्यना मेडीटेटर्स' डाला गया है, जिसको खोलने लिए यूजर नेम एवं पासवर्ड "oldstudent" and "behappy" क्रमशः लिखना होगा।

अंग्रेजी के अतिरिक्त जिन अन्य भाषाओं में इंटरनेट पर जानकारी उपलब्ध हैं वे हैं – डच, फ्रेंच, जर्मन, इटालियन, जापानी, मैंडरिन, चीनी, पुर्तगाली, स्पेनिश और स्वीडिश।

धर्मप्रसार संबंधी अन्य सूचनाएं –

● **भारत –**

वर्ष १९९८ में भारतवर्ष में कुल २७,३७० साधकों ने भाग लिया और १५,००० बच्चों को आनापान सिखाई गयी।

इसी वर्ष पंजाब के होशियारपुर में 'धम्मधज' की स्थापना हुई। महारामें औरंगाबाद से १० मील की दूरी पर वि. केंद्र के लिए भूखंड उपलब्ध हुआ। जम्मू एवं कश्मीर में तीसरे शिविर का संचालन हुआ।

धम्मानंद, पुणे में ४७ चक्षुहीनों के लिए एक दस दिवसीय शिविर सफलतापूर्वक संचालित हुआ और इसी प्रकार अहमदाबाद के 'ब्लाइंड मेन्स असोसियेशन' के ३० लोगों के लिए जुलाई में शिविर लगा। ये सभी लोग अंतर्चक्षुबोध से लाभान्वित हुए।

भारत में पांच पालि कार्यशालाओं का संचालन हुआ, जिनसे अनेक सहायक आचार्यों तथा साधकों को लाभ मिला। पालि प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम तिपिटक में से ही लिया गया था, जिससे प्रशिक्षुओं को दोहरा लाभ मिला। जोर इसी बात पर दिया गया कि लोग पालि का सही उच्चारण करते हुए बुद्धवाणी के आध्यात्मिक महत्त्व को समझ सकें और पालि सीखने के लिए अंतःप्रेरित हों। बोधगया में चल रही कार्यशाला के दौरान एक प्रशिक्षु की उक्ति थी – "यहां एक विश्वविद्यालय स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। बुद्धवाणी से चयनित पाठ्यक्रम प्रेरणाजनक और शिक्षाप्रद ही नहीं, बल्कि यह बोध भी दिलाता है कि पालि भाषा सीखना कितना आसान है। इसके लिए मेरा धन्यवाद स्वीकारें!"

भारत तथा नेपाल में सहायक आचार्यों, यों, धर्मसेवकों तथा विद्यार्थियों के लिए अनेक प्रशिक्षण शालाओं का आयोजन किया गया। लगभग ३५० से अधिक प्रशिक्षु इन कार्यशालाओं में सम्मिलित हुए।

अनेक बाल-शिविर प्रशिक्षण कार्यशालाओं का भी आयोजन किया गया। बाल-शिविरों के लिए नई हिंदी काउंसिलिंग विडियो तैयार की गयी और उसका उपयोग करके देखा गया कि यह अधिक प्रभावशाली है। अतः इसी प्रकार की विडियो अंग्रएजी में भी तैयार की गयी।

दस दिवसीय शिविर संचालन के लिए प्रयुक्त रिकार्डिग का कई भाषाओं में अनुवाद और उसकी रिकार्डिग की व्यवस्था की गयी जैसे – मलयालम, कोरियन, ग्रीक और हंगेरियन। पुराने साधकों तथा दीर्घ शिविरों की सामग्रियों का अनुवाद करके उनकी रिकार्डिग भी कन्नड, जापानी, मंगोलियन, थाई, मैंडरिन, फ्रेंच और स्पेनिश भाषाओं में की गयी।

'द इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट डेवलपमेंट' तथा 'ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कारपोरेशन लि.' (ओ.एन.जी.सी.), देहरादून ने परिपत्र जारी करके अपने लगभग २६० अधिकारियों को विभिन्न स्थानीय केंद्रों पर शिविर का लाभ लेने के लिए भेजा। परिपत्र में कहा गया है कि "विपश्यना शिविर आत्म उन्नति, तनावमुक्त व्यवस्थापन, अंततः एकजुटता, कार्यक्षमता बढ़ाने तथा उत्पादकता-वृद्धि के लिए एक आदर्श कार्यक्रम है। इससे सदाचार और व्यवहार-कुशलता में वृद्धि होती है।"

● **जेल-शिविर –**

'धम्मतिहाड़' में नियमित शिविर लग रहे हैं। वर्ष १९९८ में यहां पूज्य गुरुजी ने ८ नवनिर्मित शून्यागारों का भी उद्घाटन किया, जहां साधक अधिक गहराई से एकांत ध्यान कर पायेंगे। अजमेर और बीकानेर की जेलों में पहली बार शिविर लगे। महाराके इंस्पेक्टर जनरल(जेल) तथा सभी पांचों डिप्टी आई.जी. ने शिविर का लाभ लिया। यहां की ४२ जेलों के लगभग २२०० जेल-कर्मियों में से २०० ने विपश्यना का लाभ लिया है। अतः महारासरकार ने राज्य की ९ जेलों में विपश्यना केंद्र बना कर स्थाई रूप से शिविर

लगवाते रहने का निर्णय किया है।

● **नेपाल –**

वर्ष १९९८ में नेपाल में ३,४५० साधकों ने विपश्यना का लाभ लिया। नेपाल की जेल में पहला शिविर नवंबर में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ, जिसमें २० कैदियों ने शिविर का लाभ उठाया। वहां के प्रमुख वि. केंद्र 'धर्मशृंग' में १३ पुरुष और १२ महिला चक्षुहीनों का शिविर भी सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इसके सभी शिविरार्थियों ने बहुत प्रसन्नता और कृतज्ञता प्रकट की।

● **उत्तरी अमेरिका –**

१९९७ में सियाटल में पहला जेल-शिविर लगा था। वर्ष ९८ में वहां कुल तीन शिविर सफलतापूर्वक संपन्न हुए, जिनमें से दो केवल महिलाओं के लिए थे। एक स्थानीय साधक द्वारा इस पर बनायी गयी फिल्म – "चेंजिंग फ्राम इनसाइड" बहुत प्रेरणाजनक है। यह विपश्यना के सभी केंद्रों पर जिज्ञासुओं तथा जेल अधिकारियों को दिखाने के लिए उपलब्ध है।

बिल हार्ट की पुस्तक "द आर्ट ऑफ लिविंग" ऑडियो टेप पर रेकार्ड की गयी।

● **लैटिन अमेरिका –**

इस क्षेत्र के ९ देशों में इस वर्ष कुल १८ शिविर लगे, जिनसे लगभग ६०० लोगों ने धर्मलाभ प्राप्त किया। यहां बच्चों के भी दो शिविर लगे। मेक्सिको में केंद्र के लिए योग्य स्थान की खोज चल रही है।

● **आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड –**

'धम्मभूमि' पर एक बड़े ध्यानकक्ष का निर्माण व उद्घाटन हुआ, जिसमें ३०० साधक ध्यान कर सकते हैं। 'धम्म आलोक' में वर्ष १९९७ की अपेक्षा साधकों की संख्या दुगुनी हो गयी है। न्यू साउथ वेल्स की सरकार के सुधार सेवा विभाग ने जेल में शिविर लगवाने की स्वीकृति प्रदान की। तीन बड़े केंद्रों पर वर्ष में बच्चों के तीन या चार शिविर नियमितरूप से लगने लगे हैं। आस्ट्रेलिया में सभी जगह साधकों की संख्या में वृद्धि हुई है।

न्यूजीलैंड के 'धम्ममेदिनी' पर कुल २५ शिविर लगे। यहां एक-एक व्यक्तियों के निवास का एक नया ब्लाक बन कर तैयार हुआ।

● **पूर्व व दक्षिण-पूर्व एशिया –**

जापान – 'धम्मभानु' केंद्र पर प्रथम २० दिवसीय शिविर तथा बच्चों के शिविर का सफल संचालन हुआ। केंद्र के बाहर किसी व्यक्तिगत निवास में भी एक शिविर का सफल संचालन हुआ।

म्यंमा – मांडले में 'धम्म मण्डल' केंद्र पर १०० व्यक्तियों के लिए सुविधा है और शिविर लगने आरंभ हो गये हैं। यहां ध्यानकक्ष बन गया है। अन्य सुविधाएं अप्रल ९९ तक पूरी हो जायेंगी। इसके अतिरिक्त ११ एकड़ जमीन शहर के दक्षिण की ओर उपलब्ध हो गयी है, जहां ४०० लोगों के लिए ध्यानकक्ष का निर्माणकार्य आरंभ होगा। मोगोक में २५० लोगों की क्षमता के अनुरूप प्लाट मिल गया है, जहां प्रारंभिक कार्यारंभ हो गया है। सन २००० तक यहां निर्माणकार्य पूरे कर लिए जाने की संभावना है।

इस बीच दस दिवसीय तथा बच्चों के शिविर देश के विभिन्न भागों में लगाये गये, जिसमें सयातैजी का गांव 'पेवब्वेजी' भी शामिल है।

३० दिवसीय शिविर सामग्री का बर्मी अनुवाद पूरा हो गया है। इसकी रिकार्डिंग करनी है।

● **मध्य पूर्व –**

ईरान – १९९८ में एक और बड़ा समूह धम्मगिरि पर ध्यान के लिए आया। पिछले चार वर्षों में लगभग १५० ईरानियों ने भारत आकर शिविर का लाभ लिया है। इनमें से कई दो-तीन शिविर भी कर चुके हैं।

तेहरान –में परिचयात्मक प्रवचन के दौरान २४० व्यक्तियों ने भाग लिया और उनका तथा विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य और साइकॉलोजी विभाग का विचार है कि शीघ्र ही अनुभव लेने के लिए एक प्रयोगात्मक शिविर लगवाने की व्यवस्था की जाय।

बिल हार्ट की पुस्तक 'द आर्ट ऑफ लिविंग' का फारसी अनुवाद छपवाने की सरकारी अनुमति प्राप्त हो गयी है। (पुस्तक छप गयी।)

गल्फ स्टेट्स – बहरीन में ३४ लोगों का एक शिविर लगा और इससे प्रभावित होकर मार्च १९९९ में मस्कत में एक शिविर का आयोजन हुआ।

इज़राइल – यहां इस वर्ष कुल ६ शिविर लगे, जिनमें ६०० से अधिक साधकों ने धर्मलाभ प्राप्त किया। सभी शिविरों में क्षमता से अधिक लोगों के नाम आए। ४० बच्चों का एक बाल-शिविर भी लगा। यहां केंद्र निर्माण के लिए उपयुक्त स्थान की खोज चल रही है।

● **यूरोप –**

यू.के. – यहां की लॉनकास्टर जेल में नवंबर, ९८ में पहला ८ कैदियों का शिविर संचालित किया गया। बी.बी.सी. ने इसके समापन पर फीचर फिल्म बनायी जो कि स्थानीय न्यूज में प्रसारित की गयी। शिविर के लाभों से प्रभावित अधिकारियों ने भविष्य में और शिविर लगवाने का निवेदन किया है।

यहां 'द रॉयल नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ब्लाइंड' (आर.एन.आई.बी.) ने चक्षुहीनों की सहायता के लिए 'द आर्ट ऑफ लिविंग' का ब्रेल संस्करण तैयार किया है।

फ्रांस – 'धम्म मही' पर चैत्य में १२ और नई ध्यान गुफाएं (शून्यागार) निर्माण की गयीं। इन्हें मिला कर कुल ३० शून्यागार हो गये हैं। यहां का रिकार्डिंग स्टूडियो पूरी क्षमता से कार्यरत हो चुका है और कई प्रकार की सामग्री की रेकार्डिंग पूरी की गयी, जिनमें फ्रेंच, जर्मन, रशियन, स्पेनिश शामिल हैं। द आर्ट ऑफ लिविंग का फ्रेंच अनुवाद पुस्तकों की दूकानों में उपलब्ध है। पेरिस के समीप 'कंबोडियन धम्मगृह' विपश्यना न्यूजलेटर का कंबोडियन अनुवाद

प्रकाशित कर रहा है।

इटली – एक नया धम्मगृह 'धम्म अटल' की स्थापना हुई जिसे चार वर्ष के लिए किराए पर लिया गया है। इस बीच स्थाई केंद्र के लिए उपयुक्त स्थान की खोज जारी रहेगी। धम्म अटल गृह बहुत ही शांत और सुंदर स्थान पर है। इसमें ९० साधकों का शिविर लग सकता है तथा धर्मसेवक भी रह सकते हैं। यह मिलान और बोलोग्ना से लगभग आधे घंटे की दूरी पर तथा पियसेन्जा से एक घंटे की दूरी पर मध्यम आकार के शहर में है।

'द आर्ट ऑफ लिविंग' का दूसरा इटालियन संस्करण छपा है। इसके प्रथम संस्करण की ८५०० प्रतियां अत्यल्प समय में बिक गयी थीं।

स्पेन – इस वर्ष एक 'मजोरका' को लेकर यहां कुल छह शिविर लगे, जिनमें ४०० साधकों को धर्मलाभ प्राप्त हुआ। 'द स्पेनिश एसोसियेशन' देश के उत्तरी भाग में बार्सीलोना से ४० कि.मी. उत्तर-पूर्व की ओर 'पलाउटोरडेरा' नामक स्थान पर विपश्यना केंद्र के लिए जमीन खरीद रहा है, जो कि लगभग आधे घंटे की ड्राइव पर सुगम आवागमन के साधनों से जुड़ा है। इस बीच एसोसियेशन ने ८०वें दशक के अंत व ९० वें के आरंभ में एक योगिक-केंद्र किराए पर लेकर दस दिवसीय शिविरों का आयोजन कराता रहा है। लगभग दो हेक्टेयर में फैले इस शांत, सुंदर स्थान पर ५५ साधकों के लिए उत्तम व्यवस्था है।

अन्य देश – डेनमार्क में पहला शिविर वर्ष १९९८ में लगा। अकेंद्रीय शिविर अन्य स्थानों जैसे बेनेलक्स, पुर्तगाल, स्वीडेन, स्विटजरलैंड, सर्विया, रूस, रोमानिया तथा आस्ट्रिया में भी लगे।

जर्मनी के अतिरिक्त बेल्जियम, स्विटजरलैंड और रोमानिया में स्थायी केंद्र-निर्माण के प्रयास चल रहे हैं।

ये समाचार इंगित करते हैं कि धर्म का आलोक फैल रहा है।

सबका मंगल हो!

मंगल मृत्यु

आचार्य पद पर नियुक्ति के एक वर्ष बाद श्री हिम्मतभाई मेहता को लकवा मार गया। विपश्यना साधना के कारण वे शीघ्र अच्छे हो गये फिर भी वैशाखी का सहारा लेना पड़ता था। इस अवस्था में भी वे सदैव सक्रिय रहे और 'धम्मकोट' विपश्यना केंद्र के साउंड-सिस्टम को पूर्णतया व्यवस्थित कराया। अप्रल मई ९८ में दिल का दौरा पड़ा तो और अधिक सक्रिय हो गए थे। पूज्य गुरुजी के आगमन का समाचार सुन कर उनके सान्निध्य में धम्मकोट पर ५०० लोगों के लिए एक दिवसीय शिविर की व्यवस्था कराई और स्वयं उससे २४ घंटे पहले शांतचित्त से चले गये। घर वालों को निर्देश दिया था कि उनकी मृत्यु पर कोई लोक-व्यवहार नहीं किया जाय। घर वाले धम्मकोट पर जब पूज्य गुरुजी से मिले तो उन्होंने कहा, "इस एक दिवसीय शिविर का सारा पुण्य हिम्मतभाई को मिले।"...